(9)

जनमोर्चा, फैजाबाद 15-5-04

परियोजना, नदियों को जोड़ने या समाप्त करने की?

पुनरावलोकन — आशीष कोठारी/कांची कोहली

नदियों को जोड़ने की महत्वाकांक्षी परियोजना हेतु गठित विशेष कार्य दल के अध्यक्ष सुरेश प्रभु ने पुणे में बताया था कि 'यह परियोजना गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले करोड़ों लोगों के लिए वरदान सिद्ध होगी, इससे वनाच्छादित क्षेत्र में वृद्धि होगी, जिससे बांध एवं विलुप्त होते अन्य पशु-पक्षियों की रक्षा होगी, इससे भारत की छाती पर लदे कर्ज के पहाड़ का बोझ हल्का करने में मदद मिलेगी और इसमें 'अतिरिक्त' जल वाले क्षेत्रों से 'कमी' वाले क्षेत्रों को पानी भेजा जा सकेगा। परिणामस्वरूप बाढ़ व सूखा दोनों से बचाव होगा। उनके इस बयान से परियोजना के लक्ष्य का पता चलता है।

भारत की नदियों को जोड़कर बाढ़, सूखा, बिजली और पानी से सम्बद्ध अन्य समस्याओं का समाधान करने का विचार कोई नया नहीं है। दशकों से इस पर संवाद और विवाद होते रहे हैं और हमेशा अव्यवहारिक होने के कारण इसे ठंडे बस्ते में डाला जाता रहा है। अटल सरकार ने इसे अमली जामा पहनाने का संकल्प कर लिया था। शायद यही वजह थी कि सरकार इस पर गहन अनुसंधान एवं वैज्ञानिक रूप से इसे आगे बढ़ाने का दावा कर रही थी। सरकार को उच्चतम न्यायालय का समर्थन भी प्राप्त हुआ। अभूतपूर्व दिशा-निर्देश जारी करते हुए उच्चतम न्यायालय ने सरकार को यह परियोजना समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर पूर्ण करने का आदेश दिया।

परियोजना से आशा की गयी कि पूर्वी क्षेत्र की नदियों, मुख्यतः ब्रह्मपुत्र और गंगा की सहायक नदियों का पानी सूखा प्रभावित दक्षिण भारत को भेजा जा सकेगा। इसके लिए अनेक नदियों पर कई-कई विशालकाय बांध बनाए जायेंगे और कई नदी-घाटियों को चीरकर लंबी-लंबी नहरें बनेंगी, जिससे पानी एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचेगा।

परियोजना कितनी वैज्ञानिक है और उच्चतम न्यायालय का निर्णय कितना विवेकपूर्ण? ऐसे सवाल हैं जिनकी निष्पक्ष पड़ताल की जानी चाहिए। यक्ष प्रश्न तो यही है कि अतिरिक्त पानी है कहां? यह समूची परियोजना इस भ्रम पर टिकी है कि समुद्र में बह जाने वाला नदियों का पानी या फिर बाढ़ के रूप में मैदानों में फैल जाने वाला पानी 'बर्बाद' हो जाता है। इस बात में जरा भी सच्चाई नहीं है। जब कोई नदी जंगल, खेत और आबादी वाले क्षेत्र से गुजरती है तो अपने साथ भारी मात्रा में 'गाद' लेकर चलती है और मार्ग में सहायक नदियों से मिलने वाला पानी भी बहा ले जाती है। इस प्रकार वह भारी मात्रा में मीठा पानी समुद्र तक पहुंचाती हैं और इसी दौरान निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण कार्य भी करती है-

(१) मार्ग में एकत्रित गाद और तलछट को नदी मुहाने और समुद्रतट के आसपास फैला देती है। वस्तुतः यह गाद अत्यधिक उपयोगी होती है। यह सागरतट को मजबूत और लहरों को आगे बढ़ने से रोककर तटीय मैदानी क्षेत्र की रक्षा करती है। इसके साथ-साथ इससे पानी में पोषक तत्वों की वृद्धि होती है जो समुद्रतटीय जीवन हेतु आवश्यक है।

(२) गाद के कारण समुद्री लहरें ज्यादा आगे नहीं बढ़ पातीं, अन्यथा समुद्र का खारा जल मैदानी क्षेत्र में दूर-दूर तक फैलकर भूमि को बंजर बना देता।

(३) सागर के लवणयुक्त जल में लगातार नदी का मीठा जल मिलते रहने के कारण समुद्री जल की गुणवत्ता एवं तटीय क्षेत्र का पर्यावरण संतुलित रहता है।

नदियों का मीठा पानी सागर तक पहुंचने से रोकने के विश्वभर में अब तक के अनुभव अच्छे नहीं रहे हैं-

० घाना की वोल्टा नदी को ओकोसोम्बा बांध द्वारा रोका गया था, परिणामस्वरूप सागरतट के आसपास नदी द्वारा तलछट लाने का कार्य बंद हुआ। अब वहां १० से १५ मीटर प्रतिवर्ष की दर से समुद्रतट का कटाव होने लगा है।

अमरीका में बने बांधों से कैलिफोर्निया प्रदेश के समुद्री तटों में नदियों की गाद का आना कम हो गया है, फलस्वरूप समुद्र का तट और वहां स्थित टीलों चट्टानें नष्ट हो रही हैं और करोड़ों डॉलर का नुकसान उठाना पड़ रहा है।

० बांधों और जलधारा मोड़ने की वजह से कैस्पीयन सागर, काले सागर और अजोब सागर में मिलने वाली कई नदियों का ५० से ७० प्रतिशत तक पानी कम पहुंचता है। इससे मछली पकड़ने के व्यवसाय में ६० प्रतिशत से ज्यादा की कमी हुई है। सन् १९७७ से १९९७ के मैदान इससे ३५ अरब डॉलर का नुकसान हुआ है।

० सिंधु और उसकी सहायक नदियों का पानी भारत और पाकिस्तान द्वारा मोड़ दिये जाने के कारण अरब सागर में ८० प्रतिशत कम पानी पहुंच रहा है। इससे समुद्रतटीय वनस्पति 'मैग्रोव' के क्षेत्र में उल्लेखनीय कमी हुई है। एक समय इसका फैलाव २.५० लाख हेक्टेयर था। समुद्री जीवों के अण्डे देने और उनके पोषण के लिए 'मैग्रोव' अत्यधिक उपयोगी है, जो अब सिकुड़ता जा रहा है।

० नदियों का पानी रोक लेने की वजह से समुद्री लहरों को अपनी सीमा में रहने की प्राकृतिक प्रक्रिया बाधित हुई है, इस कारण तटीय क्षेत्रों में समुद्री लवणयुक्त जल फैलता जा रहा है। फलस्वरूप पेयजल और कृषि संकट में है। केरल इसका ज्वलंत प्रमाण है।

भारत में बांध बनने से पूर्व और उसके बन जाने के बाद सागर तटीय एवं नदी के मुहानों के क्षेत्रों की पर्यावरणीय,सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों की निगरानी करने की कोई व्यवस्था नहीं है। किन्तु उपरोक्त प्रमाणों से इतना तो सिद्ध हो ही जाता है कि सागर में मिल जाने वाला नदी का पानी वस्तुतः पानी की बर्बादी नहीं है। दरअसल अध्ययन तो यह बताते हैं कि बड़े बांध 'ग्रीन हाउस' प्रभाव बढ़ाकर वायुमंडल का तापमान बढ़ाने, परिणाम स्वरूप हिम नदी के पिघलने के कारण समुद्रतल में वृद्धि करने एवं पर्यावरणीय परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारक हैं। गोवा स्थित राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान एवं हेम्बर्ग विश्वविद्यालय के दीर्घकालीन शोध के नतीजे बताते हैं कि बांधों (और जलधारा मोड़ने) की वजह से सागर में पोषक तत्वों का पहुंचना कम हो गया है। परिणामस्वरूप वायुमंडल में मौजूद कार्बन गैस को सोखने की समुद्र की प्राकृतिक क्षमता में उल्लेखनीय कमी आयी है। अर्थात् बड़े बांध बनाकर और नदियों का रुख मोड़कर हम वायुमंडल में मौजूद हानिकारक 'ग्रीन हाउस' गैसों को सोखने वाले सबसे बड़े प्राकृतिक सोख्ता गड्ढे को अक्षम बना रहे हैं।

नदी के मुहानों और समुद्रतटों के आसपास परम्परागत रूप से खेती करने वालों और छोटे मछुआरों को बांधों के सर्वाधिक दुष्परिणाम झेलने पड़ते हैं। दुनियाभर के समुद्रतटों पर रहने वाले करोड़ों-अरबों लोगों (जीव-जन्तुओं की अनगिनत प्रजातियों की तो बात ही छोड़िए) का जीवन समुद्रतटीय एवं नदी के मुहानों के मीठे पानी पर निर्भर है। बड़े बांध उस पानी की गुणवत्ता को तेजी से खराब कर रहे हैं।

नदियों को जोड़ने की परियोजना के कारण हमारे सागर तट मछली पालन एवं मनुष्यों के रहने योग्य नहीं रहेंगे। इस प्रकार करोड़ों परिवार या तो विस्थापित होंगे या शायद समाप्त ही हो जायेंगे। वायुमंडल के तापमान में हो रही वृद्धि से हिमनदी का आकार घटता जा रहा है। इसके कारण जल प्रवाह में होने वाली कमी के क्या-क्या प्रभाव होंगे? इसका जवाब किसी के पास नहीं है और यह सवाल तो अब तक अनुत्तरित ही है कि अतिरिक्त जल है कहा?

अपने पुणे के भाषण में श्री प्रभु जोर देते रहे कि परियोजना के सभी पर्यावरणीय आयामों का गहन अध्ययन किया जायेगा। समझना कठिन है कि यह अध्ययन होगा कैसे? क्योंकि सरकार पहले ही मान चुकी है कि यह परियोजना भारत की अब तक की सर्वश्रेष्ठ परियोजना है और इससे न केवल आर्थिक वरन् पर्यावरणीय लाभ भी होंगे। जैसा प्रभु ने कहा कि वनों और वन्य प्राणियों को पानी चाहिए और इस प्रकार यह परियोजना बाघ जैसी लुप्तप्रायः प्रजाति और प्यासे परिस्थितिकी-तंत्र को बचायेगी। (सप्रेस)